ग्रामीण प्रर्वजन की प्रक्रिया एवं उसके कारण (संदर्भ स्याल्दे का जसपुर गाँव)

शोध निदेशक

डॉ. के.एन.एस.यादव
एसोशिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र
राधे हरि राजकीय स्नाकोत्तर
महाविद्यालय काशीपुर
जिला ऊधमसिंहनगर

शोधकत्री

पूजा रानी
समाजशास्त्र विभाग
संविदा असिस्टेंट प्रोफेसर
राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय
स्याल्दे, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

ग्रामीण प्रवर्जन की प्रक्रिया– उसके कारण

अंग्रेजी शासनकाल में भारतीय ग्रामीण सामाजिक संरचना में अनेक प्रकार के परिर्वतनों की श्रृंखला प्रारम्भ कर दी। इन परिर्वतनों को लाने में नगरीकरण, औद्योगीकरण, आवागमन व संचार के साधन, शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ग्रामीण एवं नगरीय समाज में परिर्वतन की गति एक समान नहीं रही है। चूँकि अंग्रेजों द्वारा अधिकांश उद्योग नगरों में ही स्थापित किए गए इसलिए नगरों की तीव्रता से विकास हुआ। प्रशासन हेतु दफ्तरों की स्थापना भी नगरों में ही की गई व स्कूल व कॉलेजों की स्थापना भी अधिकांशतया नगरों में ही हुई। इन सबके परिणाम स्वरूप नगरों की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि होने लगी। नगरों में शिक्षा एवं रोजगार के बढ़ते हुए अवसरों ने लोगों की अपनी ओर आकर्शित करना प्रारम्भ कर दिया।

गाँवों की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि तो हो रही थी परन्तु उत्पादन उस अनुपात में नहीं बढ़ रहा था। गाँव में रहने वाले अनेक परिवार प्रतिकूल प्राकृतिक परिस्थितियों एवं प्राकृतिक विपदाओं के कारण फसलों के नष्ट होने से अपनी आजिवीका कमाने में असमर्थ होते जा रहे थे। उनके सामने एक रास्ता बचता है जो उन्हें थोड़ा बहुत आशान्वित किये रहता है। यह रास्ता ''प्रर्वजन'' का रहता है जिसको अपनाकर वे या तो उस गाँव की ओर अग्रसर हो जाते है जो ज्यादा खुशहाल है अथवा उन नगरों में जाते है जहाँ मजदूरी एवं रोजगार मिलने के अवसर एवं संभावनाएँ अधिक होती है। यह कारण है कि भारत में हजारों लाखों लोग अपना गाँव छोड़कर दूरदराज के नगरों में चले जाते है। जब उन्हें नगरों में कोई रोजगार नहीं मिल पाता है तो वे दैनिक मजदूरी द्वारा अपना तथा अपने परिवार का निर्वाह करने लग जाते है।

प्रवर्जन से आषय

'' प्रवर्जन का आशय उस प्रक्रिया से है इसके द्वारा कोई व्यक्ति या समूह अपने मूल स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान की ओर जाता है।''

भारत में ग्रामीण प्रवर्जन की प्रकृति सामन्य रूप से अस्थायी होती है। गाँव से नगरों की ओर काम की तलाश करने वाले ग्रामवसी उद्योगों में श्रमिकों के रूप में कार्य करने लगते है। प्रवर्जन करने वाले ग्रामीणों में खेतीहर और गैरखेतीहर दोनों प्रकार की जनसंख्या होती है। इनमें से अधिकांश श्रमिक अपने परिवार पैतृक गाँव में ही छोड़ आते है और उन्हें जब भी मौका मिलता है वे वापस जाने के लिए तत्पर रहते है बहुत से ग्रामवासी गाँव के सामुदायिक जीवन के कारण नगरों में रहने में असुविधा महसूस करते है। उनके लिए परिवार को गाँव में छोड़ना इसलिए भी लाभदायक होता है क्योंकि गाँव में जीवन–यापन करना अधिक सुविधाजनक एवं कम खर्चीला होता है। स्त्रीयों और बच्चों को खेतों में काम भी आसानी से मिल जाता है। यदि प्रवासी मजदूर अपने परिवार के अन्य सदस्यों को नगर में अपने साथ ले आये तो उन्हें एक तो नौकरी नहीं मिलेगी और दूसरे आवास की समस्या एवं महंगाई के कारण उनका नगर में रहना मुश्किल हो जाता है।

प्रवर्जन कर नगर में आने वाले ग्रामवासी या तो औद्योगिक श्रमिकों के रूप में काम करते है या किसी अन्य प्रकार की मजदूरी का कार्य करने लगते है। उद्योगों में काम मिल जाने के बाद भी उनकी अधिक से अधिक बार गाँव लौटने

की इच्छा बनी रहती है। कई बार तो पैसे की कमी के कारण वे कई महीनों तक गाँव नहीं जा पाते है। उन्हें अपने गाँव में नियमित रूप से पैसे भी भिजवाने पड़ते है जिससे गाँव के साथ उनका संबंध बना रहता है।

भारत में ग्रामीण प्रवर्जन के कारण–

1: **जनसंख्या में वृद्धि** –भारत में ग्रामीण जनसंख्या में तीव्रता से वृद्धि हुई है। जनसंख्या में वृद्धि के अनुपात में कृशि उत्पादन में वृद्धि नही हुई है। इसके परिणाम स्वरूप गांव में रहने वाले अनेक लोगो को गांव में किसी प्रकार का कार्य का कार्य नही मिल पाता है। जिससे ये अपने परिवार का निर्वाह कर सके। ऐसी परिस्थिति से विवश होकर वे उन क्षेत्रो की ओर प्रवर्जन कर जाते है। जहाँ पर आजिविका कमाने के अधिक साधन उपलब्ध होते है।

2 **प्राकृतिक विपदाएँ–** भारत मे कृषि सदैव प्राकृति पर निर्भर रही है। समय पर वर्षा होने पर फसल अच्छी हो जाती है। जबकि ऐसा न होने पर फसल ठीक नही होती है। समय समय पर होने वाली प्राकृतिक आपदायें (जैसे महामारी, अकाल, बाढ़, सूखा) आदि भी ग्रामीण रोजगार के अवसरो पर कुप्रभाव डालती है। परिणाम स्वरूप काफी संख्या में लोग कृषि कार्यो से वंचित रह जाते है। रोजी रोटी की समस्याओं ने आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न क्षेत्रो, नगरो एवं राज्यों की ओर प्रवर्जन के लिए विवश कर देती है।

3 **निर्धनता एवं बेरोजगारी**– बढ़ती हुई जनसंख्या एवं समय–समय पर होने वाली प्राकृतिक आपदाओं/विपदाओं के परिणाम स्वरूप ग्रामीण भारत में निर्धनता एवं बेरोगारी में निरन्तर वृद्धि हुई है। इसलिए ऐसे व्यक्ति रोजगार एवं जीविकोपार्जन की तलाश में स्वयं अकेले अथवा अपने परिवार के साथ नगरो तथा औद्योगिक केन्द्रो की ओर प्रवर्जन करते है।

4 **नगरों मे रोजगार के अधिक अवसर**– प्रशासनिक एवं बाजारो के विकास की दृष्टि से नगरो मे रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध होते है। साथ ही नगरो मे औद्योगिक विकास भी तीव्रता से होता है। ये सब अवसर अनेक ग्रामीण लोगो को नगरो की ओर प्रवर्जन के लिए विवश कर देता है।

अध्ययन की आवष्यकता– प्रवर्जन भारत की एक राष्ट्रीय समस्या है। प्रवर्जन का अभिप्राय है – एक स्थान या क्षेत्र से दूसरे स्थान या क्षेत्र जाना या प्रवास करना। ये प्रवास व्यवसाय या जीविकोपार्जन की दृष्टि से हो सकता है। या प्रवर्जन प्राकृतिक आपदा से भी जिसे हम विस्थापन कहेंगे। प्रस्तुत अध्ययन जनपद अल्मोड़ा के स्याल्दे ब्लॉक के जसपुर गांव मे रहने वाले लोगो की प्रवर्जन की प्रक्रिया से संबंधित है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थिति व प्रवर्जन के कारणो को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1– उत्तरदाताओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि ज्ञांत करना।

2– उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति ज्ञांत करना।

3– प्रवर्जन के कारणो का पता लगाना।

अध्ययन प्रारूप– अध्ययन का समग्र जसपुर गांव है। जिसकी जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 1719 है। जिसमे पुरूषों की संख्या 909 तथा महिलाओं की संख्या 810 है। अतः अध्ययन के लिए हमने 50 पुरूषों का चयन दैय – निदर्शन की लॉटरी विधि द्वारा किया है। प्रस्तुत शोध के उत्तरदाता चुकि पुरूष ही है जो कि शिक्षित –अशिक्षित है। ऐसी स्थिति में उनसे प्रतिक्रिया प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की उपलब्धियाँ

तालिका सं0– 1 परिवार का मुखिया

क्रम सं0	मुखिया	आवृत्ति	प्रतिशत
01	पुरूष	40	80
02	महिला	10	20
	योग	50	100

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि कुल परिवारों में से 80 प्रतिशत पुरूष मुखिया हैं जबकि 20 प्रतिशत मुखिया स्त्री है। अतः हमारे उत्तरदाताओं की प्रकृति भी पितृसत्तात्मकता को प्रदर्शित करती है।

तालिका सं0–2 परिवार का आकार

क्रम सं0	आकार	आवृत्ति	प्रतिशत
01	एकांकी	20	40
02	संयुक्त	30	60
	योग	50	100

अवलोकन से ज्ञात होता है कि कुल परिवारों में से 60 प्रतिशत परिवार संयुक्त है जबकि 40 प्रतिशत परिवारों की प्रकृति एकांकी है। अतः परिवार के सदस्यों की संख्या ज्यादा होने के कारण परिवार व उनके भरण–पोशण के लिए पुरूषों को प्रवर्जन की प्रक्रिया को स्वीकारना पड़ता है।

तालिका सं0– 2 उत्तरदाताओं की आयु का विवरण

क्रम सं0	आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
01	21–31	27	54
02	32–42	13	26
03	43–53	07	14
04	54 से अधिक	03	06
	योग	50	100

सारणी सं0–3 में 21–31 वर्ष के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 54 है। 32–42 वर्ष के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 14 है। जबकि 54 से अधिक उत्तरदाताओं को प्रतिशत 06 है।

तालिका सं0–4 उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति का विवरण

क्रम सं0	आर्थिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
01	बहुत अच्छी	08	16
02	अच्छी	10	20
03	सामान्य	15	30
04	निम्न	17	34
	योग	50	100

उपरोक्त विवरण से पता चलता है कि कुल परिवारों में से मात्र 16 प्रतिशत लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है। अच्छी स्थिति वालें परिवारों का प्रतिशत 20 है।

30 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति सामान्य है जबकि निम्न आर्थिक स्थिति वाले परिवारो का प्रतिशत 34 है जो कि सर्वाधिक है। जिससे स्पष्ट पता चलता है कि उत्तरदाताओं की निम्न आर्थिक स्थिति भी उन्हें प्रवर्जन के लिए विवश करती है।

तालिका सं0–5 उत्तरदाताओ के पारिवारिक आय के स्त्रोत

क्रम संख्या	आय के स्त्रोत	आवृत्ति	प्रतिशत
01	कृषि	30	60
02	व्यापार	05	10

03	नौकरी	10	20
04	अन्य	05	10
	योग	50	100

अर्थिक स्थिति व्यक्ति का मानवीय संबंध ही नही बल्कि सामाजिक संबंध भी अभिव्यक्त करता है। आजकल अधिकांश लोग कृषि, व्यापार, नौकरी व अन्य कार्यो द्वारा अपनी जीविका कमाते है। उपरोक्त अध्ययन से पता चलता है कि कृषि द्वारा आय के स्त्रोत का प्रतिशत 60 है। व्यापार द्वारा आय के स्त्रोत का प्रतिशत 10 है। नौकरी द्वारा 20 व अन्य के द्वारा आय के स्त्रोत का प्रतिशत भी 10 है। अध्ययन से पता चलता है कि सबसे अधिक उत्तरदाता कृषि पर निर्भर है।

तालिका सं0–6 प्रवर्जन के कारणों को ज्ञात करना

क्रम सं0	प्रवर्जन के कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
01	जनसंख्या वृद्धि	10	20
02	प्राकृतिक विपदाएँ	20	40
03	निर्धनता एवं बेरोजगारी	15	30
04	अन्य	05	10
	योग	50	100

सारणी सं0 6 से उत्तरदाताओं के प्रवर्जन के कारणों का पता चलता है। जिनमें जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत 20 है। प्राकृतिक विपदाओं का 40, निर्धनता एवं बेरोजगारी का प्रतिशत 30 है और जबकि अन्य का प्रतिशत 10 है।

निष्कर्ष

निर्ष्कषतः पूर्ण विश्लेशण के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण प्रवर्जन हमारे समाज की सबसे गम्भीर समस्या बनती जा रही है और यदि समय रहते हुए इस समस्या का निदान नही किया गया तो इससे ना केवल समाज प्रभावित होगा अपितु ये पूरे राष्ट्र को प्रभावित करेगा। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त संकलित प्राथमिक तथ्यों के आधार पर जो निष्कर्श प्राप्त हुए है उन्हे हम इन बिन्दुओ के रूप में देख सकते है।

अध्ययन से ज्ञात होता है कि हमारे उत्तरदाताओ की पारिवारिक पृष्ठभूमि में परिवार के मुखिया सार्वाधिक है जो कि पुरूष प्रधान की समाज की व्यवस्था को परिलक्षित करता है उत्तरदाताओ के परिवार का स्वरूप सयुंक्त अधिक है। उत्तरदाताओ की अर्थिक स्थिति से भी परिलक्षित होता है, कि इनकी अर्थिक स्थिति बहुत अच्छी कम ही है और निम्न सबसे अधिक। विश्लेशण में पाया कि उत्तरदाताओं की आय के स्त्रोत में मुख्यतः कृषि अधिक है तथा नौकरी, व्यापार व अन्य काम है तथा मौसम परिवर्तन कृषि को सर्वाधिक प्रभावित करता है। प्रवर्जन के कारणों में भी प्रमुख कारण जनसंख्या वृद्धि , प्राकृतिक विपदाऐं, निर्धनता व बेरोजगारी व अन्य है परन्तु सबसे बड़ा कारण प्राकृतिक विपदाऐं है। जिस कारण इन लोगो को काफी नुकसान उठाना पड़ता है। जो कि ग्रामीण प्रवर्जन के मुख्य कारणो में से एक है ।

सन्दर्भ

1. डॉ महाजन धर्मवीर व डॉ महाजन कमलेश '' ग्रामीण व नगरीय समाजशास्त्र '' विवेक प्रकाशन पेज नं0–264–265। वर्ष 2008
2. डॉ लाल व डॉ जैन समाजशास्त्र प्रश्न पत्र द्वितीय (नेट, सेट, जे आर एफ) वर्ष 2012, उपकार प्रकाशन पृष्ठ संख्या 174।